जीएम फसलों सम्बंधी शोध पत्रों में धोखाधड़ी

नेपल्स विश्वविद्यालय से पिछले वर्षों में प्रकाशित शोध पत्रों में बताया गया था कि जेनेटिक रूप से परिवर्तित फसल उत्पादों को पशुओं को खिलाने पर हानिकारक प्रभाव हुए हैं। अब इन शोध पत्रों की जांच-पड़ताल की जा रही है क्योंकि आरोप लगा है कि इनमें जानबूझकर हेराफेरी की गई है।

दरअसल, इन शोध पत्रों के निष्कर्ष दुनिया भर में खाद्य व औषधि एजेंसियों द्वारा की गई कई अन्य सुरक्षा जांचों के विपरीत हैं। आम तौर पर इस तरह के सुरक्षा परीक्षणों का निष्कर्ष रहा है कि जेनेटिक रूप से परिवर्तित खाद्य पदार्थों को खाने में कोई खतरा नहीं है।

बात तब सामने आई जब इन शोध पत्रों का उपयोग इटली की संसद की एक समिति की सुनवाई में किया गया। सुनवाई इस बात को लेकर थी कि क्या इटली में जेनेटिक रूप से परिवर्तित फसलों को उगाने की अनुमति दी जाए। इसके चलते इटली की एक सांसद एलेना कोटेनिओ ने इन शोध पत्रों की थोड़ी छानबीन की। तीनों शोध पत्र नेपल्स विश्वविद्यालय की एक ही प्रयोगशाला से प्रकाशित हुए हैं और तीनों के मुख्य लेखक पशु चिकित्सा विशेषज्ञ फेडरिको इन्फासेली हैं। इनमें बताया गया है कि बकरियों को जेनेटिक रूप से परिवर्तित सोयाबीन खिलाया गया और उनकी संतानों में सोयाबीन के जीन पाए गए। निष्कर्ष यह है कि सोयाबीन में जो बाहरी जीन डाला गया है वह बकरी की आंतों की दीवार को पार कर जाता है और उसके दूध में आ जाता है। यह दूध पीने वाले बच्चों पर इसके जैविक असर होते हैं।

शोध पत्रों की गहराई से जांच करने पर सांसद केटेनिओ ने पाया कि इनमें जो फोटोग्राफ इस्तेमाल किए गए हैं उनके साथ छेड़छाड़ की गई है। कई फोटोग्राफ का उपयोग दो अलग-अलग जगहों पर करके शीर्षक में लिखा है कि ये दो अलग-अलग प्रयोग के फोटो हैं।

तब केटेनिओ ने बायो डिजिटल वैली नामक कंपनी को इनकी गहन जांच का ज़िम्मा दिया। यह कंपनी ऐसे मामलों में सलाहकार रही है। छानबीन से पता चला कि वास्तव में कई तस्वीरों को बदला गया है और एक से अधिक बार उपयोग किया गया है।

अब विश्वविद्यालय की एक समिति पूरे मामले की जांच कर रही है। विश्वविद्यालय की समिति की रिपोर्ट अगले माह यानी फरवरी तक आने की उम्मीद है। इस बीच शोधकर्ताओं ने इनमें से एक शोध पत्र वापिस ले लिया है। सूत्रों के अनुसार समिति का भी मत है कि इन शोध पत्रों में गैर-तार्किक दावे किए गए हैं। ***(स्रोत फीचर्स)***